Krishna's

कला दर्शन

• प्रकाश वीरेश्वर
• नुपूर शर्मा

KRISHNA Prakashan Media (P) Ltd.
MEERUT • DELHI

Scanned with CamScanner

रौजर फ्रॉय (Roger Fry 1886-1934)

ये इंग्लैन्ड के प्रसिद्ध कला समीक्षक थे, इन्होंने चित्रकला को ध्यान में रखकर सौन्दर्य-शास्त्र पर अपने विचार प्रकट किये। ये उस समय के एक नए विचारवादियों के वृत्त के सदस्य थे (The Bloomsbury Circle) इसमें इनके साथ दार्शनिक **मूर** (G.E. Moore) अर्थशास्त्री **केयन्स** (Keynes) उपन्यासकार **वर्जिनिया वुल्फ** और कला समीक्षक **क्लाईवबैल** भी शामिल थे। **रौजर फ्रॉय** और **क्लाईवबैल** दोनों अपने समसामायिक दार्शनिक **मूर** (G.E. Moore) के विचारों से प्रभावित थे। दोनों कला के विषय में लिखते थे और एक से निष्कर्षों पर पहुँचा करते थे।

रौजरफ्रॉय की प्रसिद्ध पुस्तक "ट्रान्सफोरमेशन्स" 1926 में प्रकाशित हुई। इनके विचारों में **बैल** से अधिक स्पष्टता है। इन्होंने "आकार की शुद्धता" पर बल दिया। और जनता का आकर्षण या एपील का विचार दिया। कला जैसे-जैसे शुद्ध से शुद्धतर होती चली जाती है, उसके प्रशंसकों, जिनको वह अपील करती है उनकी संख्या कम होती चली जाती है। **फ्रॉय** के अनुसार शुद्ध कला को अशुद्ध प्रकार की कला से अलग पहचाना जा सकता है ! वास्तव में किसी भी कला का, शुद्ध से अशुद्ध तक, शुद्धता की मात्रा के आधार पर, निरन्तर क्रम बनाया जा सकता है। संगीत शुद्ध कला का आदर्श है क्योंकि उसमें अमूर्तता की संभावना सबसे अधिक है। संगीत का ही उदाहरण लें तो, आलाप शुद्ध कला के छोर पर आएगा और गज़ल गायकी अशुद्ध छोर के निकट होगी। आलाप में शुद्ध नाद या ध्वनि है, जबकि गज़ल में शब्दों-काव्य-की ओर ध्यान जाता है जो मानसिक तत्व है। **फ्रॉय** के अनुसार जो कला अन्य तत्वों से जितनी कम मिश्रित होती है उतनी ही कम दूषित होती है। जिस कला में अन्य तत्व मिल जाते हैं उसमें अशुद्धता बढ़ जाती है, उदाहरण के लिए शुद्ध शास्त्रीय संगीत और दूसरी तरफ नृत्य नाटिका। कला में मिश्रण भी दो प्रकार का होता है :

1. दूसरे इन्द्रिय तत्वों का मिश्रण जैसे संगीत में नृत्य या अभिनय का मिश्रण।
2. विषय वस्तु में शारीरिक एवं अन्य तत्वों का मिश्रण।

Scanned with CamScanner

इन दोनों को मिलाकर शुद्ध से अशुद्ध तक कलाओं का क्रम बनाया जा सकता है। शुद्ध गायन, वास्तुकला, नृत्य (संगीत बिना) रेखांकन, चित्रकला, मूर्तिकला अभिनय आदि। अन्तिम श्रेणी में मिश्रित कलाएं आएंगी, जैसे ऑपेरा, गज़ल गायकी।

रौजर फ्रॉय की दो महत्वपूर्ण पुस्तक हैं, 'ट्रॉन्सफोरमेशन्स' (1926) और 'विजिन एन्ड डिज़ाईन' (1920) इनमें **फ्रॉय** ने दृश्य कलाओं की विशद विवेचना की। इन्होंने कहा कि दृश्य कलाओं में मानसिक तत्व और नाटकीय तत्व एक ओर और रूपंकर तत्व दूसरी ओर, में तनाव रहता है। मानसिक तत्वों को मनोवैज्ञानिक इकाइयों का, सम्बन्धों का, स्थान रहित संसार माना, जबकि दूसरा स्थानीय तत्व रूप या आकार है।

फ्रॉय के अनुसार, "*शुद्ध सौन्दर्य-शास्त्रीय भाव, आकार सम्बन्धी भाव हैं।*" वे आगे कहते हैं, "जिस किसी को भी चित्रकला का तनिक सा भी ज्ञान है वह जानता है, कि चित्रकला में 'क्या दिखाया गया' इसका महत्व नहीं है, 'कैसे दिखाया गया' इसका महत्व है।" उदाहरण देते हुए **फ्रॉय** ने **रैम्ब्राँ** को लिया, उनके गहन भाव उतनी ही अच्छी तरह व्यक्त होते हैं, चाहे वह क़साई की दुकान में लटके मरे जानवर दिखा रहे हों, या ईसा का सूली पर चढ़ाए जाना। **शेज़ान** आधुनिक काल के महानतम चित्रकार, अपने सबसे सुन्दर भावों को सामान्य वस्तुओं, जैसे मेज पर रक्खे फल, चीनी के बर्तन, आदि के चित्रण में दिखा देते थे। 'क्या' दिखाया जा रहा है इसका महत्व नहीं, बल्कि 'कैसे' दिखाया जा रहा है, इसका महत्व है। बल आकार पर, रूप पर है, विषय-वस्तु पर नहीं।

रूपाकार का मूल्य नाटकीय तत्व से जुड़ा है। चित्रकारों में ही से ऐसे लिए जा सकते हैं जिनमें मानसिक तत्व अधिक है जैसे पीटर ब्रूथेल का "सलीब उठाते ईसा" से लगाकर वे चित्र जहां रूपाकार तत्व अधिक प्रबल है। **रौम्ब्राँ** के "Christ before Pilate" को वे एक चित्र में नाटकीय और रूपांकर तत्वों के मिलन का अभूतपूर्व उदाहरण मानते हैं, पर ये भी मानते हैं कि ऐसा मिलन दुर्लभ है। अधिकतर तो मानसिक और प्लास्टिक तत्वों में तनाव ही पाया जाता है। वास्तव में ये दोनों तत्व अलग-अलग होते हैं और हमारा ध्यान एक से दूसरे पर आता-जाता (शिफ्टिंग) रहता है। **राफायल** के चित्र "ट्रान्सफिगरेशन" में बहुत सारे जटिल तत्व एक सम्पूर्ण इकाई में एकत्रित हो गएं, रेखाओं की दिशाएं सन्तुलित हैं, सब मिलकर एक भाव जाग्रत करते हैं जो विषय वस्तु में दिए धार्मिक भाव से पूरी तरह अलग हैं।

Scanned with CamScanner

क्या मिश्रण वास्तव में होता है ? ये कैसा मिश्रण है ? जैसा कि रासायनिक मिश्रण है ? **फ्रॉय** का उत्तर है, "भाव की दो स्थितियों का मिश्रण हमारी अपनी मानसिक स्थिति को न समझ पाने के कारण होता है।" मानसिक और प्लास्टिक पक्षों के बीच समन्वय असंभव है। ये कभी नहीं होता। **फ्रॉय** ने दो प्रकार के मिश्रण बताए, मानसिक और कलात्मक। कलात्मक मिश्रण में मानसिक मिश्रण हो भी सकता है, और नहीं भी। कलात्मक मिश्रण एक सम्पूर्ण अनुभव है।

रौजर फ्रॉय का एक प्रसिद्ध निबन्ध है The Artist and Psycho-Analysis 1924 इसमें इन्होंने मनोविश्लेषण की भाषा प्रयोग करते हुए रचना प्रक्रिया बताई। आकार व्यवस्था व सम्बन्धों में पाई जाने वाली भावात्मक प्रवृत्ति की व्याख्या करते हुए **फ्रॉय** कहते हैं- "जिसे हम शुद्ध सौन्दर्य कहते हैं, उसका भावात्मक सम्बन्ध दैनिक जीवन के भावात्मक अनुभवों में नहीं होता। ऐसा लगता है, कि उसकी शक्ति कहीं गहरे और अस्पष्ट और असामान्य स्मरण में है। जैसे कला सभी भावगत स्तरों के नीचे पहुँच कर, जो जीवन के सामान्य भाव है, उनसे गहरे पैठकर, अपनी शक्ति उस स्रोत से लाती है जो स्थान और काल की सीमा से परे है, और ऐसा भी हो सकता है कि कला में जीवन के सारे भावात्मक अनुभवों का अवशेष-निचोड़ रह गया है।" - **फ्रॉय** 1924

रौजर फ्रॉय के विचारों का सारांश

- कलाकृतियों की अपनी एक निहित महत्ता और मूल्य है। कला न जीवन है न उसकी नकल।
- कला-विज्ञान सभी शुद्ध रूप में सत्य की खोज करते हैं- जैसे गणित।
- इस प्रकार कला यदि शुद्ध है, तो उसमें एक अनिवार्य कलात्मक भाव रहेगा 'अशुद्ध' कला में अन्य तत्व सरक आएंगे। उदाहरण के लिए विज्ञापन, कला के रूप में निम्नतम, पर व्यवसाय के रूप में उच्च हो सकते हैं।
- कला सुख दे सकती है परन्तु ये आनन्द वास्तविक कलात्मक आनन्द नहीं भी हो सकता, एन्द्रिय भी हो सकता है।
- कलात्मक भाव, आकार के बारे में भाव हैं, आकार के सम्बन्धों, उनके अभिकल्प की जो छाप हमारे मन पर पड़ी है, वह कलात्मक भाव (aesthetic emotion) है।

Scanned with CamScanner